द्वितीय अध्याय

शोवेड के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय

- द्वितीय अध्याय -

"[illegible] के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय"

१]	ईसाई बाला	[१९३२]
२]	निधारागीत	[१९४८]
३]	मृगजल	[१९४९]
४]	भूमिभिर	[१९५०]
५]	ज्वालामुखी	[१९५३]
६]	पंकजा	[१९५८]
७]	धर्ममंदिर	[१९६०]
८]	अधूरा अपना	[१९६१]
९]	इन्द्रधनुष	[१९६४]
१०]	कोरा कागज	[१९७३]
११]	अमृतकुम्भ	[१९७७]

[१] ईसाई बाला - [१९३२]

शेवडे ने अपना सर्वप्रथम उपन्यास "ईसाई बाला" का प्रकाशन सन् १९३२ में इलाहाबाद के चाँद प्रेस से किया। उस समय उनकी आयु बीस वर्ष की थी और वे बी॰ए॰ में पढ़ते थे। इस समय गांधीजी द्वारा चलाया गया सन् १९३० का असहयोग आन्दोलन ने जोर पकडा था। उससे प्रभावित होकर इन्होंने एक वर्ष के लिए कालिज छोडकर आन्दोलन में हिस्सा लिया। इस आन्दोलनमें जो अनुभव मिला उसके आधार पर ही "ईसाई बाला" नामक उपन्यास का निर्माण किया। यह एक प्रेम कथा है। इस उपन्यास की नायिका एक ईसाई लड़की है और नायक एक आदर्शवादी युवक है। दोनों स्वतंत्रता संग्राम में कार्यकर्ता थे अत: दोनों का एक दूसरे के साथ संपर्क बढ़ता गया और दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति प्रेम जाग उठा। कुछ ही दिनों में वे दोनों विवाह बध्द हो गए। परंतु ये दोनों अलग बिरादरी के होने के कारण इस आन्तर-जातीय विवाह को समाज ने मान्यता नहीं दी। उन्हें बिरादरी से बहिस्कृत कर दिया गया। फिर भी दोनों टस से मस नहीं हुए। और स्वतंत्रता संग्राम में कार्यरत रहे। राष्ट्रीय संग्राम में त्याग और तपस्या की अग्नि में तपते रहे। यह देखकर विरोधियों का हृदय परिवर्तन हो जाता हैं और उन्हे आशिर्वाद देते हैं।

[२] निशा - गीत - [१९४८]

"निशागीत" शेवडे की लिखी दूसरी औपन्यासिक कृति है। जिसे "गीति" उपन्यास की संज्ञा दी जा सकती है। इसका कथानक प्रेम के आदर्श पर आधारित है। यह एक कर्तव्यनिष्ठ, जनसेवी डॉक्टर तथा नर्स पर लिखा एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। डॉक्टर मधुसूदन,

परिचारिका सुशीला तथा अध्यापिका पद्मा के त्रिकोणात्मक संबंधो की कथा है।

मधुसूदन का जन्म छिंदवाडा जीले के श्रीपुर नामक गाँव में एक माल गुजार करनेवाले परिवार में हुआ था। मधुसूदन की आयु ५ वर्ष की थी, उसी समय उसकी माँ ने एक कन्या को जन्म दिया। प्रसुति के समय उसे जो वेदनाएँ हुअी उसी में उसकी मृत्यु होती है। उसकी माँ की अन्तिम इच्छा थी कि, अपना बेटा बड़ा होकर डॉक्टर बने। जब मधुसूदन की माँ मर जाती है तो सभी लोग आपसमें बातचित करते हैं कि, शहर से डॉक्टर आ जाते तो मधु की माँ बच जाती। मधुसूदन यह बाते सुनता है और उसके मन में डॉक्टर बनने की इच्छा होती है। प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद उसने छिंदवाडा से मैट्रिक परीक्षा पास की। फिर नागपुर में इंटर तक पढ़ाई करने के बाद बम्बई के कॉलिज में दाखिला हुआ। डॉक्टरी कोर्स पूरा करने के बाद बम्बई के किंग एडवर्ड मेमोरियल अस्पताल में डॉक्टरी प्राक्टीस करने लगा। इसी समय उसकी मुलाकात नर्स सुशीला राजेश्वरी से हुई। मधुसूदन उसके गुणोंसे प्रभावित होता हैं।

अपनी डॉक्टरी शिक्षा पूरी करने के बाद मधुसूदन गाँव आता है और अपना अस्पताल खोलता है। वह अपनी परिचित परिचारिका सुशीला को खत लिखता है, और उससे सहाय्यता की याचना करता है। खत पातेही सुशीला भी गाँव आती है।

मधुसूदन और सुशीला दिन रात एक करके मरिजोंकी सेवा करते हैं। इससे वहाँ के डॉक्टर वर्मा को इर्ष्या उत्पन्न होती है। डॉ. मधुसूदन और सुशीला एक दूसरों को इतना चाहते हैं कि, वे पलभर भी एक दूसरे के बगैर रह नहीं सकते। इसलिए मधुसूदन सुशीला के सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है, पर सुशीला उसे यह कहकर इन्कार करती है कि –

"आपसे मैं उमर में आठ वर्ष बडी हूँ। फिर अनुभव और भावनाओं में एक पीढी का अन्तर है। उस दृष्टीसे तोआप मेरे सामने निरे बच्चे हैं। आप ही बताइए इस अनमेल विवाहसे मुझे सुख मिल सकता है ?" [१]

इसके बाद सुशीला के घर से डॉक्टर चले जाते हैं। नर्स सुशीला अपनी सहेली पद्मा को अपने पास बुलाती है। सुशीला पद्मा को सब कुछ बता देती है। तो पद्मा उसे कहती है, तुने उसकी इच्छा को ठुकराकर अच्छा नहीं किया। तुम्हारे बिना मधुसुदन जी भी नहीं सकता। पद्मावती चन्द्रा यह एक अध्यापिका है। उसके मन में भी सुशीला की तरह मधुसुदन के प्रति प्रेम है।

इस घटना के बाद दो दिन में ही सुशीला इस्तिफा देती है और अपने गाँव चली जाती है। गाँव में सुशीला को लेकर मधुसुदन के चरित्रपर कलंक लगाते हैं। एक दिन डॉक्टर नगर के पटाखेके बडे बेपारी हाजी अब्बास बारूदवाला की दूकानपर मरीज को देखने जाते हैं तो अचानक विस्फोट होता है और उसमें डॉक्टर बुरी तरह से जल जाते हैं। इस दुर्घटना में डॉक्टर सिर्फ अपनी दृष्टिही नहीं खो बैठते तो कुरूप भी बन जाते हैं। इस दुर्घटना के बाद डॉक्टर की देखभाल पद्मावती चेन्द्रा करती है। डॉक्टर वर्मा भी अपनी इर्ष्या भूलकर उनका इलाज करते हैं। पद्मा सुशीला को इस दुर्घटना की खबर देती है। सुशीला "डोरा" छद्मनामसे डॉक्टर की सेवा में उपस्थित होती है । कुछही दिनों में वह अनुभव करती है कि डॉ॰मधुसुदन के मन में वैसाही अनुराग है जैसे पहले था। एक दिन मधुसुदनने कहा कि, सिर में दर्द

१] अ॰गो॰शेवडे "निशागीत" पृष्ठ ८८॰

हो रहा है, तो सुशीला उसका सिर अपनी गोद में लेकर दवा लगाने लगी तो मधुसूदन के मस्तक पर आँसू की बूँदें टपकती हैं। मधुसूदन जान लेता है कि यह सुशीलाही है और सुशीलाभी अपनी असलियत कबूल करती है। और दुबारा ये दोनों सदा के लिए एक हो जाते हैं।

मधुसूदन और सुशीला अपने अंतिम क्षण डॉ. मधुसूदन के पिता का गाँव श्रीपुर में बिताने लगते हैं। यहाँ भी ये गरीबों की सेवा करते हैं। इधर पद्मावती चन्द्रा घुलघुलकर तपेदिक की शिकार होती है। पद्मा को मधुसूदन से मिलने की इच्छा होती है और वह भी श्रीपुर में आती है। सुशीला और मधुसूदन की एकाकार जिन्दगी को देखकर वह मनही मन खुश होती है और उनके सुखमें अपने दु:ख को भूल जाती है।

[३] मृगजल - [१९४९]

"मृगजल" यह उपन्यास सामाजिक मनोवैज्ञानिक तथा गाँधीवादी विचारों का चरित्र - चित्रण प्रधान उपन्यास है। यह उपन्यास नागपुर के प्रसिद्ध चित्रकार अशोक ठाकूर के जीवन पर आधारित है। अशोक एक चित्रकार है। चित्रकारिता में उन्होंने अपना सारा जीवन लगाया है। एक दिन वह अपने संध्यारानी, दिवानी, प्रणयी युगल, और स्वतंत्रता जैसे चित्रों को प्रदर्शनीमें रखता है। प्रदर्शन देखने के लिए शहर की सर्व श्रेष्ठ धनवान विधवा मायादेवी आती है। चित्रों को देखकर वह अशोक की ओर आकर्षित होती है। मायादेवी चित्रकी कीमत पूछती है, पर अशोक कहता है, "मैं कला की कीमत नहीं करता ग्राहक जो भी देता है वह मैं स्वीकार कर लेता हूँ।"[१] लेकिन मायादेवी चित्रों के साथ अशोक को भी खरीदना चाहती है। मायादेवी भोग, विलास और आनंद के सिवा कुछ

---

१) अ. गो. शेवडे, "मृगजल," पृष्ठ ५

नहीं चाहती। अशोक धन के विरोधी था। कंचन के प्रलोभन से वह अपनी कला को अलग रखनेवाला था। धनवान मायादेवी हर तरहसे अशोक को मोहित करना चाहती है। लेकिन अशोक किसी भी प्रलोभन से हार नहीं जाता और आखिर वह सातपुडा की वनश्री में जिसे पाद्रीपुर कहते हैं वहाँ जाकर अपनी साधना करता है। वहाँ उसकी मुलाकात एक अनाथ युवती मरियम से होती है। उसकी ओर वह आकर्षित होता है। मरियम एक नि:स्वार्थी युवती थी। अशोक मरियम से प्रभावित होता है। यह बात मायादेवी को मालूम होते ही वह इर्ष्या करने लगती है। वह अपने षडयंत्र के जाल में फसाने के लिए अशोक को बुलाती है और उसके सामने अर्धनग्न हो जाती है। परंतु अशोक विचलित नहीं होता। इससे पहले अशोक मरियम से पूर्ण रूप से एक हो गया था। मरियमने अशोक से गर्भ धारण किया था। इससे मायादेवी का आन्तरिक दाह कम होने की अपेक्षा अधिक प्रज्वलित होता है। वह अशोक का बदला लेने के लिए अधिक प्रवृत्त होती है।

अशोक पाद्रीपुर से सारंगपुर और फिर वह लोनावला में आ जाता है। यहाँ उसकी मुलाकात असुणा से होती है, और यह परिचय विवाह में बदल जाता है। असुणा न्यायाधिश की बेटी है। इसलिए वह ऐयाशी जीवन बीताना पसंद करती है। लेकिन अशोक इसके विरोधी था। जिसके कारण इन दोनों का संघर्ष बढता चला जाता है, और एक दिन असुणा अशोक को छोडकर चली जाती है। असुणा को अपने वश में करके मायादेवी अशोक को धमकाती है। वह कहती है, "मेरे प्रणय का तिरस्कार करके आप मरियम के बाहुपाश में कुदते हुए शर्म नहीं आयी ? और अब मरियम को छोडकर असुणा के पिछे भाग रहे हो ? असुणासे भी कोई अच्छी लडकी मिल जाय तो असुणा को छोडकर उसके पिछे भागेंगे ?

इसका क्या अर्थ है ?" यह कहकर मायादेवी अपनी साडी का एक आँचल नीचे छोडकर ब्लाउज का बटन खोल देती है। फिर भी अशोक विचलित नहीं होता तब मायादेवी अपने सौंदर्य से पहली बार घृणा करने लगती है। और अशोक को अपना भाई मान लेती है। अशोक मरियम की पीडा की कल्पना से चिन्तित होता हैं। वह अपैंडिसायटिस का शिकार होता है, उसका ऑपरेशन होता है। ऑपरेशन के बाद मरियम अशोक को मिलने आती हैं, तो अशोक उससे क्षमा माँगता है, और स्वयं मृगजल के पिछे दौडने को अपनी गलतीपर पछतावा करने लगता है। अंत में वह मरियम और उसके बच्चे को स्वीकार करता है।

[४] पूर्णिमा – [१९५०]

"पूर्णिमा" यह एक अत्यंत रोचक^मनो वैज्ञानिक तथा सामाजिक आधुनिक उपन्यास है। इसमें मानव मनकी व्दंव्दात्मक प्रकृति का बडा सुन्दर और मार्मिक विश्लेषण हुआ है। इस उपन्यास में सेक्स, प्रेम, तथा विवाह को एक नयी पृष्ठभुमिपर चित्रित करने का प्रयत्न किया है। "पूर्णिमा" बॅरिस्टर पंडित की सौंदर्यशील कन्या है। जिसे सिर्फ हँसना, खेलना, मालूम होता है। इसे नाराज होते कभी किसीने देखा नहीं था। जब पूर्णिमा कॉलेज में प्रवेश करती है तो इसके उपर अनेक छात्र आकर्षित होते हैं। उसमें से उसकी मुलाकात दो छात्रों से होती है। एक है, विलास बाबू जो धनवान है, विलासी है, नारी जाति की ओर वह हमेशा भोगवादी दृष्टिसे देखता था। दूसरा है, विनयकुमार। विनयकुमार धैर्यवान, स्वावलंम्बी था। नारी जाति की सेवा करना वह अपना कर्तव्य मानता था। इस तरह पूर्णिमा इन दो युवकों की ओर भिन्न – भिन्न दृष्टिसे आकृष्ठ होती है। पुरुषार्थ तथा सुखोपभोगी वृत्ति के कारण पूर्णिमा विलास की

---

१) आ. गो. शेवडे; "मृगजल", पृष्ठ २१२.

SHRI. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY ... KOLHAPUR

और पूर्णिमा से आकृष्ट होती है, फिर भी उसके उपर विनयकुमार के तेजस्वी विचारों का असर भी जरूर होता है। विनय कुमार को वह सच्चे मित्र के नाते स्वीकार करती है। परंतु "स्त्री अहं" के कारण वह विलासकुमार के मोह में पूरी तरह फँस जाती है। विलास भी उसे कुछ अमिष दिखाकर उसे अपने रंगमें पुरी तरह रंगवा देता है और दोनों का अवैध संबंध हो जाता है। इसका परिणाम पूर्णिमा को विवाह के पूर्व मातृत्व आता है। इसलिए समाज उससे नफरत करता है और कलंकित ठहराता है। विलास भी उससे विवाह से इन्कार कर देता है। पूर्णिमा के पिता बॅरिस्टर पंडित बहुत दु:खी होते हैं, तो विनय-कुमार उन्हे धीरज देकर कहता है, "दुनिया के सब लोग तुमसे नफरत करते है तो करने दो लेकिन मैं तो तुमसे अच्छी तरह जानता हूँ। मेरे हृदय में तुम्हारे प्रति सदैव सहानुभूति है।"[1] विनय कुमारने पूर्णिमा को धीरज देते हुए कहाता है - "पाप और पुण्य के क्या मुल्य है, तुम्हारे हाथ से अनजाने में कोई गलती हो गयी, हो तो कौन सा तुफान आ गया, या आसमान फट गया।"[2] और उन्होंने स्वयं पूर्णिमा को सेण्ट आॅगस्टीन हाॅस्पिटल में दाखिल कर देता है। अन्त में पूर्णिमा एक बेबी को जन्म देती है और विनय कुमार से कहती है, "कितना अच्छा होता कि आप इस बेटी के पिता होते।"[3] विनयकुमार पूर्णिमा के इस इच्छा को स्वीकार लेता है और कहता है - "तो अभी क्या हुआ यह बेबी मेरी ही है और मैं इससे हृदय से स्वीकार करता हूँ।"[4] यह सुनकर पूर्णिमा आनंद विभोर होती है और उसका मातृत्व बोल उठता है।

[५] ज्वालामुखी - [१९५६]

स्वातंत्र्योत्तर कालीन हिन्दी राजनीतिक उपन्यासोंमें "ज्वालामुखी" एक उल्लेखनीय उपन्यास है। यह सन् १९४२ की अगस्त क्रान्ति की पृष्ठ भुमिपर लिखा गया है। स्वतंत्रता के आंदोलन में एक परिवार कैसे अपना सर्वस्व दान कर डालता है, इसका बडा सजीव चित्रण इस उपन्यास में मिलता है।

---

१) आ. गो. शेवडे 'पूर्णिमा' पृष्ठ १२७ २) वही पृष्ठ १२७ ३) वही पृष्ठ १५६ ४) वही पृष्ठ १५६

उपन्यास का नायक अभय कुमार है। वह पी. एच्. डी. कर रहा था। उसके गुणों से प्रभावित होकर एक न्यायाधिश की पुत्री विजया उससे विवाह करती है। उनके विवाह के बाद कुछ ही दिनों में सन् १९४२ का "भारत छोडो" आन्दोलन छीड जाता है। उसमें अभय कुमार राष्ट्रप्रेमी होने के कारण सम्मीलीत हो जाता हैं। घुघरी ग्राम में लोगोंने उस समय गांधीजी के आदेशों को मानकर रक्तमय क्रान्ति की आवाज उठाते हैं। जनता इन्स्पेक्टर बाबुराम और मुन्शी अन्नुखाँ को जिन्दा जला देते हैं। इसका मूळ कारण अभय कुमार को मानकर अंग्रेज सरकार अभयकुमार को पकडने का, जिन्दा गिरफ्तार करने का आॅर्डर निकालते हैं। अभयकुमार जंगलों में खुंखार प्रदेशोंमें, भूखा, नंगे पैरों, भिकारी बनकर, कभी साधु बनकर घूमता रहता हैं। एक दिन वह साधु वेश में ही घर के पास पकडा जाता है। उसे गिरफ्तार करने के बाद खास न्यायाधिश की नियुक्ति की जाती है, और उस पर घुघरी हत्याकांड का जुर्म लगाकर उसे फांसी की शिक्षा फर्माते हैं। अभय की फांसी कम करने के लिए वहाँ के लोग काफी प्रयत्न करते हैं, लेकिन कोई फायदा नहीं होता। आखिर अभय को फांसी चढाया जाता है। उसकी शव यात्रा के समय वातावरण हृदय भेदक बन जाता हैं। पुलिस घबराई जाती है। यात्रा समाप्त करने के लिए प्रयत्न करने लगती है। तो जनता और पुलिस में संघर्ष होता है। उस लाठीमार में विजया बुरी तरह से घायल होती है, और वह भी प्राण त्याग देती है। दोनों का एक ही चितापर दाह संस्कार होता है। नायक की वृध्दमाता संसार त्याग कर गंगा के तट पर जाकर संन्यास लेती है। १५ अगस्त सन् १९४७ तक वह जीवित रहती हैं। १५ अगस्त को भारत को आजाद देखकर सपनों की परिपूर्ति की खुशी में स्वयं को गंगामें लोट देती है और दुनियासे विदा हो जाती है। और इस तरह भारतीय स्वतंत्रता के साथ - साथ अभय कुमार का परिवार समाप्त हो जाता हैं।

[२] मंगला - [१९५७]

"मंगला" यह एक सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। जिसका राजनीतिसे कोई सम्बन्ध नहीं। इसमें नेत्रहीन कलाकार की कलात्मक कथा होने के कारण इसे "नेत्रहीनों की गीता" भी कहा जाता है। इसका ब्रेयल लिपि में संस्करण प्रकाशित हुआ है। प्रेम, संगीत और जीवन पर आधारित "मंगला" उपन्यास अन्धे संगीतकार के व्यक्ति-रूपर आधारित है। यह उपन्यास अनमेल विवाह, तथा विवाह और प्रेम, घर और बाहर, जैसी समस्यायें लेकर विकसीत हुआ है। ये कथा सूर - संगीत विद्यालय के प्रिन्सीपल पंडित सदानंद के जीवनपर आधारित हैं।

पंडित सदानंद एक अन्धे संगीत तज्ञ है। उसका विवाह एक सौंदर्यशील, रूपवती मंगला से होता है। मंगला के कुंडली में सप्तम स्थान पर मंगल ग्रह होने के कारण उससे कोई विवाह करने के लिए तैयार नहीं होता। इसी दोष का निराकरण होने के लिए उसका विवाह किसी अपंग के साथ किया जाय तो सफल होगा नहीं तो वह अपने विवाह के एक वर्ष के अंदर ही अपने पति को खा लेगी और स्वयं विधवा बन जायेगी, ऐसा ज्योतिषोंका कहना था। इसलिए उसका विवाह अन्धे सदानंद के साथ किया जाता है। यह विवाह मंगला अपनी इच्छासे नहीं बल्कि मजबुरीसे करती हैं। सदानंद अन्धा होने के कारण उसके सौंदर्य की तारीफ नहीं कर सकता। सदानन्द मंगला के मानसिक तथा शारीरिक इच्छाएँ तृप्त न कर सकने के कारण वह चन्द्रकान्त की ओर आकर्षित हो जाती है। अन्धे के अन्धत्व का लाभ उठाकर दोनों भाग जाते हैं पत्नी के वियोगसे सदानन्द दुःखी होता है, परंतु मृणालीनी उसे प्रेरणा देती है। फिर सदानन्द अपनी अखंड साधना से आचार्यत्व प्राप्त कर लेता है। अखिल

भारतीय संगीत सम्मेलनों के निमंत्रण आने लगते हैं। उनकी ख्याती फैलने लगती है। एक दिन बम्बई में शास्त्रीय संगीत गायन का कार्यक्रम आयोजित किया था, तब भरी सभा को सदानन्द ने अपने संगीत से मंत्र मुग्ध करता है। धनी युवक चंद्रकान्त के साथ कुछ दिन गुजारने के बाद मंगला को उससे नफरत होती है और वह पुन: सदानन्द के पास आती है। सदानन्द भी उन्हे स्वीकार लेता है। मृणालीनी मंगला और सदानन्द के मीलन के लिए अपने आपको समर्पित करती हैं, और देखते ही देखते सदानन्द के तानपुरे की धून में उसके सुमधुर स्वर विलिन हो जाते हैं।

[७] भग्न मंदिर - [१९६०]

स्वातंत्र्योतर भारत की पृष्ठ भुमिपर लिखा गया यह शेवडे का दूसरा राजनीतिक उपन्यास है। "भग्नमंदिर" एक प्रदेश के ऐसे मुख्यमंत्री के प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार की कहानी चित्रित है। जो स्वतंत्रता के पूर्व त्यागी, राष्ट्रभक्त, और कर्मठ सेनानी थे, पर वही सत्ता प्राप्ति के उपरान्त भ्रष्टाचार के गर्त में फँसे जाते हैं।

धनंजय और पूरणचन्द जोशी ये दोनों स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले पत्रकार थे और स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने के कारण दोनों एक साथ जेल में भी रहे। जब १५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतंत्र हुआ तब भारत का पहला मंत्रीमंडळ बनाया गया। पूरणचन्द जोशी भी विशाल प्रदेश के मुख्यमंत्री बेन और उन्होने श्रेष्ठ गांधी भक्ति के नाते धनंजय और गीता को मंत्रीमंडल में सम्मिलीत करने के लिए आग्रह किया। लेकिन उसे इन्कार किया गया। तब जोशी ने अपने पुराने दैनिक का नया "युगांतर" में रूपांतर करके धनंजय को उसका सम्पादक बना दिया।

धनंजय सच्चा गांधीवादी होने के कारण उन्होंने सोचा की अपना समाचार पत्र किसी की भाटगिरी नहीं करेगा। वह सत्य और अहिंसा को अपना मूल मंत्र मानता था। जब वह राजभ्रष्टाचार का केंद्र जोशीजी बन रहे हैं, यह देखता है, तो धनंजय अस्वस्थ बन जाता हैं। मुलतत्व में भिन्नता आने के कारण धनंजय और मुख्यमंत्री जोशी के बीच संघर्ष निर्माण होता है। यह संघर्ष इतना बढ जाता है कि, जोशीजी धनंजय को अपने सहकारी तथा पुलिसों की सहाय्यता से खत्म करने का इरादा करते हैं। परंतु न्याय का अन्याय पर, अहिंसा का हिंसा पर, निस्वार्थ का स्वार्थ पर, रक्षक का भक्षय पर विजय होता है। धनंजय भोलानाथ की सहाय्यतासे, जनता की मदतसे, गीता के सहकार्य से और बाबाजी की कृपासे विजयी होता है। अंत में यह मामला पंतप्रधान के पास जाता है, और पंतप्रधान जोशी को मुख्यमंत्रीपद से हटा देते हैं बादमें जोशी भी संसार से बीदा लेते हैं। इस प्रकार व्यक्तिगत स्पर्धा का रूपांतर राष्ट्रीय पृष्ठभूमिपर हुआ है।

[८] अधूरा सपना – [१९६०]

शेवडे का यह एक लघु उपन्यास हैं। इसकी कल्पना शेवडे को उनकी पत्नी की एक सहेली के रेडियों पर गायें करूणार्द्र भजन से मिलती है। ये उपन्यास पहले "परिक्रमा" नाम से लिखा गया था। बाद में इसे प्रकाशित करते हुअे "अधूरा सपना" नाम दिया गया। अपनी जिंदगी में मनुष्य अपने अनेक अधूरे सपनों को संभालकर रखता है। उनकी मधुर स्मृतियां उनका जीवनाधार बन जाती है।

उपन्यास का नायक एक सन्यासी है। वह प्रेम भंग के कारण संसार

से विरक्त होता है। वह पढा - लिखा शिक्षित युवक है। उन्होने योरोप की यात्रा भी की है। योरोप में बारह बरस का काल बीता फिर भी वह अपने प्रियतमा को भूल नहीं सका। निरंतर उसे प्रियतमा की याद सताती रहती है। इधर उसके प्रेयसी की शादी हो जाती है। इसीलिए वह प्रेम भंग के कारण संसार से विरक्त होता है। और बद्रीनाथ केदारनाथ की परिक्रमा करता हुआ वह अपनी बाकी की जिंदगी गुजारता है। उसे लगता है, जो प्रेम इस जनम में न पा सका वह केदार नाथ तथा बद्रीनाथ की परिक्रमा करके पुनर्जन्म के फेरे में उसे अवश्य पा सकेगा। यही उसके मन में एक "अधूरा सपना" हैं।

[९] इन्द्रधनुष्य - [१९६५]

इन्द्रधनुष्य दम्पति जीवन के विभिन्न रंगों की ~~दुनिया की~~ दुनिया को चित्रित करनेवाला एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। यह उपन्यास "साप्ताहिक हिन्दुस्थान" में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ था। बादमें यह पुस्तक के रूप में सामने आया। इसमें गृहस्थी जीवन के स्त्री-पुरूष के संबन्ध से उठने वाले संघर्ष का चित्रण मिलता हैं।

स्वतंत्रता पूर्व काल में भद्रपूर नामक एक छोटासा राज्य था। लेकिन रियासतों की बर्खास्तगी के साथ इसका भी विलिनीकरण हो जाता हैं। उस समय भद्रपूर के महाराजा ने एक करोड रूपये खर्च करके भद्रपुर विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। वे विश्वविद्यालय को ज्ञानमंदिर बनाना चाहते थे, लेकिन वहाँ के भ्रष्टाचार, अनैतिकता ने उसे राजनीतिक आखाडा बना दिया जाता है। जिसके कारण दर्शन शास्त्र के विव्दान डॉ• ज्ञान शंकर जैसे अध्यव्यवसायीका वहाँ रहना मुश्किल हो जाता है और वह सपत्नी बम्बई आ जाते हैं। बम्बई आकर वे पठन - पाठन

आदि में इतने व्यस्त रहते हैं कि, उसे अपने गृहस्थी का भी ख्याल नहीं रहता। उनका विवाह पंद्रह वर्ष पहले हुआ था। लेकिन अभी तक उन्हे कोई सन्तान नहीं था। यह कमी उसकी पत्नी वीणा को महसूस होने लगती है। उसकी खाली गोद उसे खाने लगती है। एक दिन प्रो• ज्ञानशंकर श्याम को घूमने चले जाते हैं। वहीं उनकी मुलाकात आत्महत्या करने के लिए आये हुए दलीप से होती है। दलीप यह एक आवारा तथा सेक्स प्रधान पुरूष है। उसे दिल्ली के धनवान की कन्या नयन कुमारी से अवैध सम्बन्ध के सिलसिले में बहुत पिटते हैं और शहर से निकालते हैं। ऐसे युवक को ज्ञानशंकर संरक्षण देते हैं। उसे अपने कॉलिज के ग्रंथालय में नौकरी दिलवाते हैं। रहने का प्रबन्ध भी वहीं किया जाता है। कुछ दिनों के बाद डॉ• ज्ञान शंकर को चुनाव के सिलसिले में कुछ दिनों के लिए भद्रपुर जाना पडता है। जाते वक्त वह दलीपको वीणा का ख्याल रखने के लिए कहते हैं। जैसे ही ज्ञान शंकर भद्रपुर जाते हैं तो दलीप का प्रो• ज्ञानशंकर के घर आना बढ जाता हैं। इससे कई बरसों सें सुप्त पडी हुअी वीणा की मातृत्व की भावनाएँ जाग उठती हैं और वीणा दलीप के करीब आती हैं वह अपने आपको संभल नहीं पाती। उसकी दैंम्भिक इच्छा दलीप से तृप्त होती है। परंतु ज्ञान शंकर को दलीप के "रूमाल" से दलीप और वीणा के गुप्त संबंधों का राज मालूम होता है और ज्ञान शंकर दलीप को नौकरी से निकाल देते हैं। लेकिन बदनामी की कल्पनासे ज्ञान शंकर घबरा जाते हैं और "प्रतिशोध" की आग में वीणा का खुन करना चाहते हैं। सौभाग्य से ज्ञानशंकर की भेंट डॉ• सुमन्त तथा उनकी पत्नी डॉ• सुमित्रा से होती है। डॉक्टर दम्पति शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे इस प्रश्न की ओर देखते हैं। वे कहते हैं - इसमें दोष वीणा का भी है और इससे ज्यादा ज्ञान शंकर का है। डॉ• दम्पति के उपदेश से डॉ• ज्ञानशंकर अपनी गलती कबूल करता है और ज्ञानशंकर वीणा के साथ सुखी जीवन बीताने लगता है।

[१०] <u>कोरा कागज</u> - [१९७३]

साहित्य को ही सब कुछ मानने वाले लेखक निरंजन की यह जीवन गाथा है। निरंजन साहित्य सृजन ही अपने जीवन का लक्ष मानता है। वह रीता का आशिक है, लेकिन प्रेम भंग के कारण जीवन की कौनसी भी चीज उसे आकर्षित नहीं कर सकती। प्रेम भंग के दर्दसे इस तरह टूट जाता है, कि, आजीवन यायावरी करने के बाद भी वह जीवन का सही अर्थ एवं सम नहीं जान लेता। वह सिर्फ साहित्य सृजनमें ही जुट जाता है। सुंदर सुंदर कहानियाँ लिखता है। आकाशवाणी, पत्र-पत्रिकाएँ, चित्रपट निर्माता, पाठक, आदि उसकी कथाओं का इंतजार करते हैं। उसे अपनी कलम पर भरोसा है। लिखना अपना धर्म मानकर उसी के बलपर जीवन यापन का प्रयास करता है। उसे अनेक अमिष दिखाने के बाद भी वह अपना कर्तव्य नहीं भूलता। उसे असिस्टंट कमिशनर के पद पर नियुक्त किया जाता है। तनख्वाह और प्रतिष्ठा भी मिलती है। कर्नल डी॰आर॰आनंद की बेटी जयन्ती का रिस्ता भी उससे तय होता हैं। लेकिन पद प्रतिष्ठा में उलझे रहने की उसकी इच्छा न होकर एक अच्छा साहित्यकार बनने की इच्छा थी। अत: पद प्रतिष्ठा से मुक्त होने के लिए वह अपने पद का इस्तिफा देता है। और गौतम बुध्द की तरह गृह त्याग कर बम्बई चला जाता है। प्रसंगवश अपर्णा का तबादला बम्बई आकाशवाणी में होने की सुचना उन्हे मिलती है, जिसका परिचय रेडियों के एक कार्यक्रम के सिल-सिले में हुआ था। बम्बई आकर निरंजन भूमिगत रहता है। रंग मंच की संम्पादिका मंजुश्री उन्हे इसलिए ढुंढती है कि, हरवंश सदारंगानी उसकी "अग्निकंकण" कहानी पर चित्रपट तैयार करना चाहता है। अपर्णा उसका इंतजार करती है, क्योंकि उसके रायल्टि के पैसे जमा चुके थे। इन लोगों से मिलने पर भी निरंजन के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं होता। बाद में निरंजन बद्रिनाथ पहुंचता है। वहाँ उसका साहित्य पुष्ठ होता हैं। उसे प्रकाशित करने के

लिए उसे दिल्ली में आना पडता है। दिल्ली के साहित्यिक गुटबंदी को देखकर वह निराश होता है और प्रधान मंत्री से मिलता है। प्रधान मंत्री उससे प्रभावित होकर राज्य सभापर उसकी नियुक्ति कर देते हैं। निरंजन को लगता है कि अब जीवन में आराम मिलेगा अत: वह ऐसा उपन्यास लिखने की सोचता है, जीस में जीवन का सभी चित्र होगा। उसके लिए उन्होने "अंतिम प्रश्न" ऐसा नाम दिया था। इतने में उसके ससूर कर्नल आनंद उन्हे मिलते हैं, और जयंती की हालत सुनाते हैं। जयंती की हालत सुनकर निरंजन दु:खी होता है, लेकिन कन्या वंदना और डॉ॰ राजेश्वर के प्रेम विवाह से उन्हे अत्यानंद होता है। अंतमें वह कहता है कि, मैं॰ स्वधर्म का पालन नहीं कर पाया। नलिखना लेखक की सबसे बडी पराजय है। अंत में अपर्णा को एक दर्द भरा खत लिखता हैं और उसके "अंतिम प्रश्न" उपन्यास के कोरे कागजाद कोरे ही रह जाते हैं।

[११] <u>अमृत कुम्भ</u> – [१९७७]

शेवडे का यह लिखा हुआ अंतिम उपन्यास है। मनुष्य अपनी उत्तरार्ध की जिंदगीमें अन्तर्मुख होकर कुछ हद तक अध्यात्मिक भी होता है। शेवडे का "अमृत कुम्भ" उपन्यास इसका प्रमाण हैं। शेवडे का यह अंतिम उपन्यास दर्शन से परिपूर्ण एक श्रेष्ठ कृति माना जाता हैं।

" अमृत कुम्भ " सत्यकाम और पालीन के मीलन की कथा है। उपन्यास का नायक सत्यकाम अनाथाश्रम में पला है। वह शिक्षा-दिक्षा ग्रहण कर अपने एक मित्र अशोक पालिया के रेयान फॅक्टरी में बडा अधिकारी बन जाता है। वह धीरे-धीरे यह अनुभव करता है कि फॅक्टरी के प्रदुषण से पूरा गाँव पीडित है। इसका कारण वह स्वयं को मानकर नौकरी का त्याग पत्र दे देता है और अपनी माँ के आदेशों का पालन

करने के लिए निकल पडता है। भ्रमण करते - करते वह हरिपुरा में आ पहुंचता है। वहाँ उसकी भेंट अमरिकी युवती पालीन से होती है। पालीन अमरिका के महानगर न्यूयार्क में रहनेवाली लडकी थी। वहाँ वह कटु अनुभवों को प्राप्त कर आत्मशांति के लिए भारत आकर वह भी हरिपुरा गांव में ही बस जाती है। हरिपुरा में दोनों सुखिया के घर मिलते हैं। यहाँ इन दो जीवों को सुखद सरल तथा अध्यात्मिक शान्ति मिलती है, फिर भी दोनों स्थायी शांति की तृप्ति के लिए हिमालय की ओर चले जाते हैं। अंत में दोनों देश, धर्म, जाति, आदि सभी भेदों को भूलकर मानव धर्म को स्वीकार कर एक विश्व की कल्पना में एक दूसरे के लिए समर्पित कर देते हैं। सत्यकाम और पालीन की यह कथा पूर्व-पश्चिम संस्कृति का समन्वय है। इस समन्वय से ही विश्वशांति प्रस्थापित हो सकती हैं।

निष्कर्ष -

जिस तरह कलाकार या गायक अपने नित्य निरंतर साधना करके अपने उद्देश्य तक पहुंच जाता है उसी तरह शेवडे भी सन १९३२ से लेकर सन १९७७ तक अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए साधना करते रहे। अपने उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने करुणा, अहिंसा, हृदयपरिवर्तन, विश्वशांति, विश्व-बंधुत्व, सत्यं-शिवं-सुंदरम् आदि भावों का चित्रण कर गांधीवादी आदर्शों को अपने उपन्यासों में चित्रित कर लोगों के सामने पेश किया है। शेवडे प्रेमचंदोत्तर कालीन होते हुए भी हमे प्रेमचंद युगीन उपन्यासकार ही लगते हैं। क्योंकि जिस प्रकार प्रेमचंद के उपन्यासोंमें समाज का जो यथार्थ चित्रण दिखाई देता है वैसा ही चित्रण शेवडे के उपन्यासों में हमें मिलता है। उनके अधिक तर उपन्यास सामाजिक विषयों को लेकर प्रस्तुत हुअे हैं। उन्होंने

अपने उपन्यासों में नारी के प्रति प्रगतिशील नजर से देखना, पाप-पुण्य की नयी व्याख्या, देशभक्ति, स्वातंत्र्य मृत्यु आदि बातों का स्पष्ट विवेचन और विश्लेषण किया गया है। अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय सामाजिक समस्याओं को सुलझाने की पध्दति, आदि के संदर्भ में उनके मौलिक विचार मिलते हैं।

स्वातंत्र्य पूर्व कालखंड की उनकी एक-मात्र उपन्यास कृति "ईसाई बाला" में उस युग की परिस्थितियाँ तथा गांधीवाद की स्पष्ट झलक नजर आती हैं। "ईसाई बाला" उपन्यास में प्रेम के आदर्श के साथ-साथ सामाजिक पृष्टभूमि में आदर्शोन्मुख यथार्थ वाद की स्पष्ट झाँकी दिखाई देती हैं। राष्ट्र प्रेम, स्वतंत्रता, एकता उस काल की माँग थी। अत: शेवडे ने इस पार्श्वभूमिपर "अंतर जातिय विवाह" को दिखाकर साम्प्रदायिक एकता पर बल देकर भारतीय युवक युवतियों के सामने एक आदर्श की प्रतिष्ठा की गयी हैं।

"निशा-गीत" का उद्देश्य तत्कालिन समाज के विशाक्त वातावरण में उदात्त और सुरुचिपूर्ण प्रेम का उदाहरण प्रस्तुत करता रहा हैं। प्रेम वास्तवमें आत्मा और हृदय की वस्तु हैं उसकी शारीरिक सौंदर्य , आयु का वर्ण, आदि से संबंध बहुत कम होता हैं। प्रेम के आदर्श के साथ-साथ मध्य प्रदेश के अविकसित प्रदेश की स्वातंत्र्य-पूर्व काल की सामाजिक स्थिति का चित्रण करके तत्कालिन वातावरण को सजीव बना दिया है। त्याग, निस्वार्थ प्रेम, सेवाभावी वृत्ति, के आदर्श गुणों के साथ भारतीय नारी का सुंदर चित्र प्रस्तुत कर नारी को महत्ता प्रदान की गयी हैं।

"मृगजल" उपन्यास कलाकार के जीवन के लिए समर्पित हैं। इस

उपन्यास में कला और जीवन तथा कला और प्रेम इन समस्याओं का संघर्ष तथा समन्वय दिखाया गया है। नारी की सेवा और त्याग जैसे गुणों के साथ नारी स्वभाव के विविध पहलुओं को भी चित्रित किया गया हैं।

"पूर्णिमा" उपन्यास शिक्षा जगत को उजागर करता है। पाप-पुण्य, पैसा, प्रतिष्ठा, प्रेम आदि बातों पर अपना मत स्पष्ट कर उपन्यासकार ने हमारे समाज की तीखी आलोचना की है। इस उपन्यास की नायिका पूर्णिमा का चित्रण मानसिक धरातल पर किया गया हैं। नारी की गलतियों को स्वीकार कर उनका स्वीकार करने में ही पुरूषार्थ हैं। इस धारणा को प्रस्तुत कर नारी के प्रति उदारतासे तथा प्रगतिशील दृष्टिसे देखने की आवश्यकता को बडी कुशलतासे एवं मार्मिक ढंग से समझाया हैं।

"ज्वालामुखी" उपन्यास की कथावस्तु सन १९४२ की अगस्त क्रांतिपर आधारित हैं। इसमें नायक व्यक्तिगत स्वार्थ से उपर उठकर समाज तथा राष्ट्र की भलाई सोचता हैं। नारी का पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग देना नारी का विकासात्मक का ही प्रमाण हैं। भारतीय नारी को कर्तव्य परायण नारी के रूप में चित्रित करने का भरसक प्रयास इसमें किया गया हैं।

"मंगला" उपन्यास कलाकार के जीवन पर समर्पित किया गया है। प्रेम संगीत तथा जीवन दर्शन पर आधारित यह उपन्यास एक अन्धे संगीत तज्ञ की कहानी हैं। मंगला में कलाकार की जींदगी को स्वर देने के साथही नारी की व्यथा-व्यदनाओं को प्रकट करने का उद्देश्य स्पष्ट नजर आता हैं।

" भग्नमंदिर " एक प्रदेश के ऐसे मुख्यमंत्रि के शासन से व्याप्त भ्रष्टाचार की कहानी हैं। जो स्वतंत्रता के पूर्व त्यागी राष्ट्र भक्त और

कर्मठ सेनानी थे। पर वहीं समा प्राप्ति के बाद भ्रष्टाचार के जाल में फस जाते हैं। इसमें कांग्रेसी मंत्रीमंडल, तत्कालिन राजनीति और पत्रकारिता के गांधीवादी आदर्श को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया हैं।

" अधूरा सपना यह एक शोवडे का लघु उपन्यास हैं। इसमें लघु उपन्यास की सभी विशेषताएँ नजर आती हैं। मनुष्य अपनी जींदगी में अनेक अधूरे सपनों को संजोकर रखता हैं। उनकी मधूर स्मृतियाँ उसका जीवन-धाराबन जाती हैं। प्रस्तुत उपन्यास में मनोवृत्ति का सुंदर दर्शन मिलता हैं। स्त्री और पुरूष के प्रेम का उदात्त स्वरूप इस उपन्यास में दिखाई देता हैं।

" इंद्रधनुष " में नैतिक मुल्यों का जो पहुमुखी -हास हो रहा हैं उसका प्रतिबिंब स्वाभाविक रीतिसे दिखाई देता हैं। इस उपन्यास के माध्यम से लेखनने सेक्स स्त्री-पुरूष संबंध, शैक्षणिक जगत का -हास, नैतिकता का -हास, मनुष्य का स्वार्थ, आदि बातों को खोल दिया हैं। गृहस्थ जीवन के विभिन्न पहलूओं के परिप्रेस में स्त्री-पुरूष संबंध उससे उठनेवाले संघर्ष आदि का चित्रण किया गया हैं। इसमें वर्णित समस्याएँ और उन्हें सुलझाने के उपाय आदि की चर्चा होने के कारण प्रस्तुत उपन्यास आदर्शो-न्मुख यथार्थवाद के कोटी में रखा जा सकता हैं।

" कोरा कागज " यह एक ऐसे साहित्यकार की कहानी हैं, जो साहित्य को ही सब कुछ मानता हैं। साहित्य उसके लिए आत्माकी पुकार हैं। लिखना धर्म मानकर उसीके बलपर जीवन यापन का प्रयास करता हैं। सुख-दु:ख की कल्पना पाप-पुण्य की व्याख्या, दैववाद तथा दार्शनिक विचारों का नया दृष्टिकोण आदि का " कोरा कागज " में विकासात्मक रूप मिलता हैं।

मनुष्य अपनी उत्तरार्ध की जींदगी में अंतरमुखी होकर कुछ हद तक आध्यात्मिक भी होता हैं। शेवडे का "अमृत कुंम्भ" इसका प्रमाण हैं। यह दर्शन शास्त्र से परिपूर्ण एक श्रेष्ठ उपन्यास हैं। उपन्यास का उद्देश्य भविष्य में मानवता की स्थापना करना रहा हैं। इसके अलावा अन्य राष्ट्रों की आन्तरिक परिस्थिति की मार्मिक आलोचना कर भारतीय संस्कृतिकी श्रेष्ठता को दिखाने का सफल प्रयास किया गया हैं।